मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन 01 फरवरी, 2023

मुक्त विश्वविद्यालय में समसामयिक शिक्षा में शिक्षक के उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य विषय पर व्याख्यान

दिनांक 01 फरवरी, 2023 को शिक्षा विद्या शाखा के तत्वाधान में एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रोफेसर पी. के. स्टालिन, निदेशक शिक्षा विद्या शाखा एवं बतौर मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता प्रोफेसर श्री शिव मोहन सिंह, पूर्व कुलपति, डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या रहे। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर छत्रसाल सिंह, कार्यक्रम के विषय प्रवर्तन प्रोफेसर पी. के. पाण्डेय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुरेंद्र कुमार एवं का संचालन श्री परविंद कुमार वर्मा ने किया। कार्यक्रम में शिक्षा विद्या शाखा के समस्त शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया।

विद्यार्थियों को आचरण का भी ज्ञान दे शिक्षक– प्रोफेसर सिंह

प्रोफेसर श्री शिव मोहन सिंह

मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता प्रोफेसर श्री शिव मोहन सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज शिक्षा में ज्ञान के साथ–साथ आदर्श की आवश्यकता है आचार्य किताबी ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थियों को आचरण का भी ज्ञान दें, जिसके दम पर विद्यार्थी अपने ज्ञान का उपयोग देश व समाज के सकारात्मक विकास में प्रयोग करें। किताबी ज्ञान अधिक हो जाने से आदर्श का ज्ञान संभव हो पाएगा। इसलिए हमें विद्यार्थियों को निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजरते हुए भी अनुभव कराने का प्रयास करना चाहिए कि आपका जीवन क्या केवल किताबी ज्ञान तक सीमित हो जाए या उस ज्ञान का समाज में उपयोग हो इसका भी ध्यान कराना चाहिए अपने अनुभव के माध्यम से प्रोफेसर सिंह ने कहा कि आज विश्वविद्यालयों की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है वहां प्रत्येक विद्यार्थी केवल ज्ञान प्राप्त करने और नौकरी के पीछे अपनी पूरी उम्र खफा देने में ज्यादा कार्यरत रहता है। कभी देश व समाज के बारे में सोचने या उसके लिए कुछ करने हेतु तत्पर दिखाई नहीं देता है। यह कमी क्यों है? यह बहुत ही चिंता एवं चिंतन का विषय है। इस पर हमें निरंतर सोचने की आवश्यकता है विश्वविद्यालय में अनुशासन मजबूत होना चाहिए विश्वविद्यालय अनुशासनहीन होते ही गर्त की ओर चला जाता है इसलिए हमें विश्वविद्यालय में अनुशासन केवल प्रशासन के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा प्रदान करने के लिए भी होना चाहिए। हमें अपने मेधा विद्यार्थियों को बनाने के लिए राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें इस पर उन्हें निरंतर शोध करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। प्राचीन ग्रंथों पर विवाद चल रहा है वह भारत में क्यों है। भारत में ही इस तरीके के विवाद क्यों उत्पन्न होते हैं। यह भी चिंतन का विषय है भारत इतना विशाल और भारत के लोगों में भावना इतनी प्रबल क्यों है, क्योंकि यहां भक्ति का भाव थे देश का प्रशासक सांस्कृतिक पुजारी है इसलिए राष्ट्र के प्रति समर्पित है वह प्रशासन को शिक्षा के माध्यम से उसके आदर्शों की ओर ध्यान दिलाने का जो प्रयास किए वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है जो भारत देश पहले सोने की चिड़िया हुआ करता था वह अब कैसे आज गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा मार्ग की ओर अग्रसर है। इस पर हमें चिंतन करना चाहिए। जो धरती पहले शस्य श्यामला से पूर्ण थी आज 80 करोड़ लोगों को भोजन करा रही है यह कैसे संभव हो रहा है दोनों विरोधाभास को हमें समझने की आवश्यकता है पूरे विश्व में विविधता सबसे अधिक भारत में है। और भारत में अनेक ऐसे मेधा को जन्म दिया जो भारत को अनेक ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। हमें यह समझने की जरूरत है कि अयोध्या साकेत की नगरी स्वर्ग से धरा पर आ रही है जैसे भाव को आज हमारे प्रशासक पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहे हैं। भारत को सशक्त कर रहे हैं ऐसे हमें अपने विद्यार्थियों में ज्ञान रोपित करने की आवश्यकता है आज हम विभिन्न जाति ,धर्म, समुदाय में बटते जा रहे हैं क्या कभी हम सोच पाते हैं कि हमारे पूर्वजों का रक्त एक था जो मातृभूमि से प्रेम करते थे हम मातृभूमि या राष्ट्र से प्रेम की भावना विद्यार्थियों में अगर भरे तो यह संभव है कि हमारा राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर होगा। इसके लिए शिक्षक को भी पूरी तरीके से पुस्तक की ज्ञान से निकल कर, अपने आदर्शों के माध्यम से समाज में आना होगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा जगत से अवगत कराते हुए मजबूत करना होगा। सभी के समावेशी सहयोग से देश व राष्ट्र के लिए कुछ करने हेतु प्रेरित करना होगा समाज में प्रत्येक बच्चा राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर दे, ऐसे आदेशों का बीजारोपण शिक्षकों के माध्यम से संभव है। इसलिए प्रत्येक शिक्षक को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होना चाहिए और अपने निरंतर आदर्शों के माध्यम से शिक्षा व समाज के लिए कार्य करते रहना चाहिए। अंत में अपनी बात को समझाते हुए प्रो सिंह ने कहा कि घना अंधेरा दीपक को भेद नहीं सकता, लेकिन एक छोटी दीपक गहरे अंधेरे को भेद सकती है इसी भावना से शिक्षकों अपने दायित्व और कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए।